Chap-3

तृतीय अध्याय

साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंधकार: एक परिचयात्मक अध्ययन

- साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंध की पृष्ठभूमि

- साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंधकारों का परिचय
  हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रवीन्द्रनाथ त्यागी, लतीफ, घोंघी, श्रीलाल शुक्ल, नरेन्द्र कोहली, केशवचन्द्र वर्मा, सुदर्शन मजीठिया, शंकर पुणताम्बेकर, बरसानेलाल चतुर्वेदी, के.पी.सक्सेना, रोशनलाल सुरीरवाला, गोपाल प्रसाद व्यास, संसारचन्द्र, प्रेम जनमेजय, बालेन्दु शेखर तिवारी, श्यामसुन्दर घोष, रामनारायण उपाध्याय, मधुसूदन पाटिल, सूर्यबाला, आत्मानंद मिश्र, अमृतराय

- हिन्दी व्यंग्य साहित्य में अन्य व्यंग्यकारों का योगदान

तृतीय अध्याय

साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंधकार: एक परिचयात्मक अध्ययन

साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंध की पृष्ठभूमि

स्वतंत्र्यता प्राप्ति के पश्चात हिन्दी व्यंग्य निबंध की धारा अधिक विकसित हुई। इसका मुख्य कारण देश में व्याप्त विभिन्न विसंगतियाँ हैं। स्वाधीनता कालीन भारत में विसंगतियों का भयावह दोर तेज गति से बढ़ता ही गया। स्वतंत्रता पूर्व नेताओं तथा जनता ने जिस 'भारत' देश का स्वप्न देखा था, वह अधूरा दिखाई दिया। रामराज्य की परिकल्पना में रामभरोसे जैसी परिस्थिति का निर्माण हुआ। सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, संस्कृतिक आदि क्षेत्रों में विसंगतियाँ बढ़ने लगी। व्यंग्य विसंगतियों से ही जन्मता है और हमारे देश के प्रत्येक क्षेत्र में विसंगतियाँ ही विसंगतियाँ प्रकाशमान होती चली गई। यही कारण है - "व्यंग्य की धारा में अत्याधिक पैनापन आया सन् 1960 के पश्चात्। यह इसलिए कि स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ ही वर्षों के पश्चात जनमानस जिस मोह-भंग की स्थिति से गुजर रहा था, वह अब जैसे पाराकाष्ठा को पहुँच चुकी थी"[1] अतः हम कह सकते हैं कि स्वातंत्र्योत्तर युग की परिस्थितियाँ ही व्यंग्य करने की प्रेरणा बनी।

आज देश में ऐसी कोई पत्र-पत्रिकाएँ नहीं जिसमें व्यंग्य निबंध लिखा न जाता हो। देश की समस्याओ एवं विसंगतियों को प्रदर्शित करने के लिए साहित्य के पास व्यंग्य से बढ़कर कोई प्रहारात्मक शस्त्र नहीं है।

"1960 के आसपास हिन्दी में हास्य-व्यंग्य का नया दौर आया। आजादी के बाद जो अनाचार प्रशासन व समाज में फैला, उसे देखते हुए यह होना स्वाभाविक ही था। हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, श्रीलाल शुक्ल व रवीन्द्रनाथ त्यागी की पीढ़ी ने हिन्दी में हास्य-व्यंग्य को शुद्र से ब्राह्मण बनाया और हास्य-व्यंग्य लिखने की ऐसी ललक उठाई कि हिन्दी का हर नया लेखक व्यंग्यकार बनने की सोचने लगा।"[2]

साठोत्तर युग में व्यंग्य को अपने निबंधों के माध्यम से व्यक्त करने का सफलता पूर्वक प्रयास जिन व्यंग्यकारों ने किया है, उन प्रमुख व्यंग्यकारों की रचना तथा उनका परिचायत्मक अध्ययन इस अध्याय में किया गया हैं।

साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंधकारों का परिचय

हरिशंकर परसाई **(1924 - 1995)**

साठोत्तर युग में हिन्दी व्यंग्य निबंध के प्रवाह को विकसित करने का श्रेय हरिशंकर परसाई को जाता है। परसाई व्यंग्य साहित्य में एक ऐसे सशक्त हस्ताक्षर हैं, जिन्होंने व्यंग्य को शुद्र से ब्राह्मण बनाया। अपने स्वतंत्र्य दृष्टिकोण एवं लेखनी की धारा से व्यंग्य को उत्कृष्ट कोटि में स्थान दिलवाया। परसाई का ज्यादातर व्यंग्य साहित्य, निबंधों के रूप में संग्रहित है। स्वतंत्रता के पश्चात देश में उत्पन्न हुई सभी विसंगतियों पर उन्होंने अपनी पैनी दृष्टि से तीव्र व्यंग्य किया है। इस संबंध में रवीन्द्रनाथ त्यागी ने लिखा है कि -"आजादी से पहले का हिन्दुस्तान जानने के लिए सिर्फ प्रमचन्द्र ही पढ़ना काफी है, उसी तरह आजादी के बाद के भारत का पूरा दस्तावेज परसाई की रचनाओं से सुरक्षित हैं।"[3]

हरिशंकर परसाई लिखित व्यंग्य परक कृतियों की सूची निम्नानुसार है :

1)	हँसते हैं .... रोते हैं	(1953)
2)	भूत के पांव पीछे	(1954)
3)	तब की बात और थी	(1956)
4)	सदाचार का तावीज	(1962)
5)	जैसे उनके दिन फिरे	(1963)
6)	बेईमानी की परत	(1963)
7)	सुनो भाई साधो	(1964)
8)	पगडंडियों का जमाना	(1967)
9)	तिरछी रेखाएँ	(1967)
10)	उल्टी सीधी	(1968)
11)	और अन्त में	(1968)
12)	निठल्ले की डायरी	(1968)
13)	ठिठुरता हुआ गणतंत्र	(1970)
14)	शिकायत मुझे भी है	(1970)
15)	अपनी अपनी बीमारी	(1972)
16)	वैष्णव की फिसलन	(1973)
17)	मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ	(1977)
18)	एक लड़की पाँच दीवाने	(1980)

19) विकलांग श्रद्धा का दौर (1980)

20) माटी कहे कुम्हार से (1980)

21) पाखण्ड का आध्यात्म (1982)

22) तट की खोज में (1982)

23) दो नाक वाले लोग (1983)

24) काग भगौड़ा (1983)

25) प्रतिनिधि व्यंग्य (1983)

26) तुलसीदास चंदन घिसें (1986)

27) हम इस उम्र से वाकिफ है (1987)

28) कहत कबीर (1988)

29) ऐसा भी सोचा जाता है (1993)

हरिशंकर परसाई की समस्त व्यंग्य रचनाओं का संग्रह 'परसाई रचनावली' (1985) कुल छह खण्डों में उपलब्ध है। 'परसाई रचनावली' खण्ड- 4 में इनके राजनीतिक विषय पर आधारित व्यंग्य निबंधों का संग्रह है।

परसाई का लेखन कार्य सन् 1947 में जबलपुर में 'प्रहरी' नामक पत्र में छपी कहानी 'पैसे का खेल' से प्रारंभ हुआ। तब से अंत तक वे निरन्तर विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में व्यंग्य-स्तंभ लिख कर प्रसिद्धि हासल की।

प्रेम जनमेजय परसाई के संदर्भ में लिखतें हैं कि - "हरिशंकर परसाई और व्यंग्य का पर्याय हैं। इस व्यंग्यकार ने सही रूप में व्यंग्य की आवश्यकता का अनुभव किया और अपने सभी दिशा पूर्ण लेखन के द्वारा उसे इतना सशक्त बना दिया की व्यंग्य का आज साहित्य की विभिन्न विधाओं में क्षिप्र गति से प्रवेश हो रहा है।"[4]

विषय की दृष्टि से परसाई के व्यंग्य निबंधों में वैविध्य देखने को मिलता है। वर्तमान जीवन का यर्थाथ इनकें व्यंग्य साहित्य में मिलता है। परसाई ने सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, साहित्यिक, शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक आदि क्षेत्र से जुड़ी विसंगतियों पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है।

परसाई ने राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार, अनाचार, नेताओं की दल-बदल प्रवृत्ति आदि विषय को लेकर व्यंग्य किया है। रिश्वतखोरी, स्वार्थवृत्ति, अवसरवाद, भाई-भतिजावाद, पाखण्ड, कालाबाजारी जैसी विसंगतियों को व्यंग्य निबंध के माध्यम से उजागर किया है। नेताओं की दल-बदल प्रवृत्ति पर परसाई व्यंग्य प्रहार

करते हैं - "ये मर्द उसी के घर मैं बैठ जाते हैं, जो मंत्रिमण्डल बनाने में समर्थ हो। शादी इस पार्टी से हुई थी, मगर मंत्रिमण्डल दूसरा पार्टीवाला बनाने लगा तो उसी की बहू बन गये। राजनीति के मर्दों ने वेश्याओं को मात कर दिया। किसी-किसी ने घण्टे भर में तीन-तीन खसम बदले।"[5]

धार्मिक आडम्बरों, रीति-रिवाज; पादरी, मुल्ला, पंडित द्वारा अपने धर्म के बखान आदि तथा धर्म के विषयों पर व्यंग्य किया हैं। "जिस दिन पादरी का बढ़िया चोंगा सिला होगा उस दिन से चर्च में ईश्वर ने आना छोड़ दिया होगा। जिनती देर मुल्ला मस्जिद से चिल्लाकर खुदा को पुकारता है उतनी देर खुदा मस्जिद से भाग जाता होगा। और जब पंडित ने पूजा में तरह-तरह के बहाने से यजमान के पैसे रखाएँ होंगे तो देवता घबराकर खिसक गये होंगे।"[6]

हरिशंकर परसाई के व्यंग्य निबंधों में भाषा तथा शैली दोनों की विविधता मिलती हैं। विशेषण, क्रियाविशेषण, उपमाओं, फेंटसी, मिथक, बिम्ब, मानवीयकरण आदि शैलीय तत्वों का यथास्थान प्रयोग किया है।

डॉ. भागीरथ मिश्र ने परसाई के व्यंग्य निबंध को 'डाक्यूमेण्टरी लेखा'[7] की संज्ञा दी है। हरिशंकर परसाई के व्यंग्य साहित्य के अस्मरणीय योगदान को अनेक रूपों से सराहा गया है। सन् 1982 में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार', 'चकल्लस', 'भवभूत अलंकरण' आदि सम्मानों से उन्हें सम्मानित किया गया हैं।

शरद जोशी (1931 - 1991)

शरद जोशी हिन्दी व्यंग्य निबंध साहित्य के शीर्षस्थ व्यंग्यकार हैं। उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़कर स्वतंत्र रूप से लेखन कार्य को ही अपनाया। सन् 1952 में जोशीजी 'परिक्रमा' स्तम्भ में युवा व्यंग्यकार के रूप में उभरे। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में उन्होंने व्यंग्य लिखें हैं। "नवभारत टाइम्स" के 'प्रतिदिन' कोलम में अप्रैल 1985 से शुरू किया कार्य आजीवन चलता रहा।

शरद जोशी का प्रकाशित व्यंग्य साहित्य इस प्रकार है -

1)	परिक्रमा	1985
2)	जीप पर सवार इल्लियाँ	1971
3)	किसी बहाने	1971
4)	रहा किनारे बैठ	1972
5)	तिलस्म	1973

6)	दूसरी सतह	1975
7)	पिछले दिनों	1978
8)	मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनायें	1980
9)	यथासम्भव (चुने हुए 100 व्यंग्यों का संग्रह)	1984
10)	हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे	1987
11)	एक था गधा अलादाद (व्यंग्य नाटक)	1990
12)	अन्धे का हाथी (व्यंग्य नाटक)	1990
13)	सरकार का जादू	1990
14)	मुद्रिका रहस्य	1992
15)	प्रतिदिन	1994
16)	मैं, मैं और केवल मैं कमलमुख बी.ए.	1995
17)	नावक के तीर ..... आदि।	

इन व्यंग्य संग्रहों मे शरद जोशी के व्यंग्य निबंध संग्रहित है।

डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी ने जोशीजी के व्यंग्य के संदर्भ में लिखा है कि - "व्यंग्य विधा को प्रतिष्ठित करने में हरिशंकर परसाई की जो भूमिका रही है वैसी ही भूमिका शरद जोशी ने व्यंग्य को शैलीय विस्तार एवं पाठकीय प्रसार देने में निभायी है। हिन्दी व्यंग्य में सम्प्रेषण की जितनी विविधताएँ उपलब्ध हैं भाषा का कितना अनूठापन विद्यमान है, शिल्प की जितनी भंगिमाएँ मौजूद हैं - उन सबका समन्वित श्रेय शायद सबसे अधिक शरद जोशी को दिया जा सकता है।"[8]

राजनीति के विभिन्न पहलुओं, सम्प्रदायवाद, जातिवाद, नारी के प्रति द्वेष भावना, दहेज प्रथा आदि विषयों को लेकर शरद जोशी ने व्यंग्य निबंध लिखें हैं।

'जीप पर सवार इल्लियाँ' निबंध संग्रह में सरकारी शासन व्यवस्था, सरकारी अधिकारी की स्वार्थवृत्ति तथा सामाजिक एवं व्यावसायिक व्यवहार पर व्यंग्य मिलता है। 'चुनाव : एक मुर्माबीती' में इन्होंने राजनीति में फैले भ्रष्टाचार एवं कुटनीति का पर्दाफाश करते हुए लिखा है कि - "जनता का वोट उसे कम्बल, रजाइयाँ, ढंकर, शराब पिलाकर छीन लिया जाता है। परन्तु जीत जाने पर उसी की खाल खींची जाती है, उसी का खून पिया जाता है।"[9]

हरिशंकर परसाई की तरह शरद जोशी ने आन्तराष्ट्रीय विषय को लेकर व्यंग्य का सृजन किया हैं। विदेशी संस्कृति, विदेशी नेता, विदेशी सरकार आदि पर भी व्यंग्य किया हैं। 'पाकिस्तान का बम' रचना में हमारे प्रतिद्वन्दी पाकिस्तान

की राजनीति पर तथा जीया साहब की कुटनीति पर व्यंग्य किया है। इनके व्यंग्य निबंधों में मुख्यत: राजनीति का विषय अधिक रहा है। सरकारी नेता, राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार, चुनाव प्रक्रिया में छल-कपट, मँहगाई, भ्रष्टाचार, बेकारी, गरीबी, निराशावादी, दृष्तिकोण, घूँस, चमचागीरी, धार्मिक गुरूओं का पाखंड, अंधश्रद्धा भेदभाव, साहित्यकारों की प्रकृति, संस्कृति में बदलाव, प्रशासकीय व्यवहार तथा सामाजिक प्रवृत्तियों आदि पर अनेक रूप से व्यंग्य प्रहार अपने व्यंग्य निबंधों में किये हैं।

आजादी मिले हमें कई वर्ष हो गये। किन्तु सच्चा समाजवाद अभी तक नहीं आया। आज भी भारत देश में गरीबी, महँगाई और बेरोजगारी जैसी समस्याएँ हैं, जो हल नहीं हो सकीं। इस पर व्यंग्य करते हुए शरद जोशी लिखते हैं - "भूख के मारे विरहा विसर आये, कजरी-कबरी भूल जायें, समझ में आता है। मगर अभाव और मँहगाई में समाजवाद को भूल जायेंगे यह कल्पना मार्क्स को भी नहीं होगी।"[10]

शरद जोशी के व्यंग्य में विषय तथा शैलीगत वैविध्य मिलता है। इनके व्यंग्य निबंधों में बम्बईया हिन्दी भाषा का प्रयोग मिलता है। फन्तासी शैली, वर्णनात्मक शैली, कथोपकथन शैली, प्रतीकात्मक शैली, तुलनात्मक शैली, आलोचनात्मक शैली जैसी विभिन्न शैलियों का यथा स्थान प्रयोग किया है।

"व्यंग्य विधा को शिल्प की दृष्टि से स्थान देने वाले 'व्यंग्य शिल्पकार' के रूप में जोशी की शिनाख्त हैं।"[11] "शरद जोशी को इन्दौर द्वारा 'सारस्वत मार्तण्ड' की उपाधि, 'अट्टहास 91', 'चकल्लस पुरस्कार', 'काकाहाथरसी पुरस्कार', 'ठिठौली पुरस्कार' तथा सन् 1990 में राष्ट्रपति द्वारा 'पद्मश्री' की उपाधि आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया गया हैं। इन्होंने व्यंग्य साहित्य में अपना अनूठा योगदान दिया है।

रवीन्द्रनाथ त्यागी (1930)

रवीन्द्रनाथ त्यागी हिन्दी व्यंग्य साहित्य के एक सफल व्यंग्यकार हैं। इन्होंने 7 कविता संग्रह, 4 बच्चों की हास्य कथाओं के संग्रह, 1 उपन्यास, 9 चुनी हुई रचनाओं के संग्रह, उर्दू-हिन्दी हास्य-व्यंग्य नामक महत्वपूर्ण ग्रंथ का संपादन किया तथा 24 व्यंग्य संग्रह लिखें हैं।

सन् 1954 में इलाहाबाद युनिवर्सिटी से एम.ए. (अर्थशास्त्र) करने के पश्चात "इण्डियन डिफेन्स एकाउण्ट्स सर्विस' के लिए चुने गये। 7 वर्ष उन्होंने

केन्द्रिय सचिवालय में उच्च पदों पर गुजारे। वायुसेना तथा जलसेना के उत्तरी कमान के 'कण्टरोल ऑफ डिफेन्स एकाउण्ट्स' रहे तथा इसके पश्चात् 'नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट ऐन्ड एकाउण्ट्स' के डायरेक्टर बनाये गये। सन् 1989 में सेवानिवृत्त हुए।

रवीन्द्रनाथ त्यागी का प्रकाशित व्यंग्य साहित्य निम्नानुसार है :

1)	खुली धूप में नाव पर	1963
2)	भितचित्र	1966
3)	मल्लिनाथ की परंपरा	1969
4)	कृष्णवाहन की कथा	1971
5)	देवदार के पेड़	1973
6)	शोक-सभा	1974
7)	अतिथि-कक्ष	1977
8)	सुन्दरकली	1978
9)	फुलों वाले कैक्टस	1978
10)	ऋृतु-वर्णन	1979
11)	भद्र पुरूष	1980
12)	इस देश के लोग	1982
14)	आत्म लेख	1985
15)	पराजित पीढ़ी के नाम	1988
16)	प्रसंगवश	1988
17)	विषकन्या	1990
18)	चम्पाकली	1992
19)	इतिहास का सव	1993
20)	शुक्ल पक्ष	1993
21)	देश-विदेश की कथा	1993
22)	गणतंत्र दिवस की शोभा-यात्रा	

संकलन

1)	फूटकर	1976
2)	मेरी व्यंग्य कथाएँ	1976

3)	मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ	1982
4)	रवीन्द्रनाथ त्यागी प्रतिनिधि रचनाएँ	1987
5)	प्रतिनिधि व्यंग्य	1989
6)	पूरब खिले पलाश	1998

रवीन्द्रनाथ त्यागी की प्रतिनिधि रचनाओं का संपादन डॉ. कमल किशोर गोयनका ने अलग से 'प्रतिनिधि रचनायें' में किया हैं, जो देश की सभी भाषाओं में अनूदित हैं। त्यागी की चुनी गई 100 व्यंग्य रचनाओं का संग्रह 'पूरब खिले पलाश' है, जिसमें इनके द्वारा लिखित व्यंग्य निबंध मिलते हैं।

डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी ने त्यागी के व्यंग्य को विनोद गर्भित बैद्धिक बताया है। वे लिखते हैं - "अपने कथन, कौशल और जानकारी मूलक अभिव्यंजना द्वारा रवीन्द्रनाथ त्यागी ने हिन्दी व्यंग्य को एक अलग अन्दाज दिया है। यह अन्दाज नहीं सात परदों में छिपी कथ्य नायिका को अनावृत्त करता है तो कहीं मनोरंजन की रसधारा का नि:संकोच वर्णन करता हुआ नए पैंतरे का परिचय देता है।"[12]

त्यागीजी ने क्लासिक युग से लेकर आधुनिक युग की साहित्यिक रूढ़ियों, कवि, लेखकों, आलोचकों, साहित्य में प्रचलित वादों (छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद...... आदि) आदि साहित्यिक विषय पर व्यंग्य किया है। 'मेरा साहित्य प्रेम' निबंध में आज के समय में साहित्य का निर्माण किस प्रयोजन से होता है उस पर तीव्र व्यंग्य किया है। यथा-"वह जमाना गया जबकि बिना कोर्स में किताब लगने की आशा किए और बिना किसी लोकल एम.एल.ए. से जान पहचान हुये बाबा तुलसीदास और संत सूर या कबीर हजारों-हजारों पुष्ठों की पुस्तक लिखा करते थे। अब तो लोग सिर्फ प्रादेशिक पुरस्कार पाने और आस-पास की लड़कियों को फँसाने के लिये साहित्य लिखते हैं। फला साहब शिक्षा मंत्री हो गये तो जनाब रातो-रात उनके साले साहब ने प्रकाशन खोल दिया और एक हफता बीतते-बीतते उनके भाई हिन्दी के ख्याति प्राप्त गद्यकार हो गये।"[13]

रवीन्द्रनाथ त्यागी ने साहित्य के क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों पर अधिक व्यंग्य प्रहार किये हैं। इसके अतिरिक्त राजनीतिक तथा प्रशासनिक व्यंग्य भी किये है। इन्होंने व्यंग्य निबंधों में मध्यम वर्गीय मानसिक पिछड़ापन, लघुताग्रन्थी, हीन भावना, आर्थिक शोषण, नौकरशाही, छल कपट, ढोंग, मिथ्याचार, जैसी जीवन में व्याप्त विभिन्न विद्रूपताओं पर व्यंग्य किया है।

त्यागीजी ने संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू, अरबी, फारसी की शब्दावली तथा वाक्यों द्वारा व्यंग्य की चमत्कृति लाने का प्रयास किया है। पौराणिक दृष्टांतों की पुनःरूक्ति, मानवीयकरण, अतिशयोक्ति, वक्रता, सूक्तियाँ, परिभाषा आदि शैलीय उपकरणों का प्रयोग व्यंग्य निबंध में मिलता है। परिहासात्मक शैली, भाषण शैली, पत्र शैली, उपहासात्मक शैली, हेत्वाभास शैली, विवरणात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली और गपशप शैली जैसी शैलियों का प्रयोग किया है।

रवीन्द्रनाथ त्यागी को 'चक्कलस पुरस्कार', 'टेपा पुरस्कार', 'शरद जोशी पुरस्कार' तथा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया हैं। आज भी इनका लेखन कार्य जारी है। इन्होंने व्यंग्य रचनाओं के अतिरिक्त साहित्य की अन्य विधाओं में भी सृजन किया है।

लतीफ घोंघी (1935)

लतीफ घोंघी ने बी.ए, एल.एल.बी. करके वकालत (पब्लिक नोटरी) का पेशा अपनाया। साथ ही सन् 1960-61 से अपने लेखन कार्य की शरूआत की थी। घोंघी की अब तक 32 जितनी व्यंग्य पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। महाराष्ट्र स्कुली पाठ्य-क्रम में इनकी व्यंग्य रचना पढ़ाई जाती हैं।

लतीफ घोंघी का प्रकाशित व्यंग्य साहित्य :

1)	तिकोन चेहरे	1964
2)	उड़ते उल्लू के पंख	1968
3)	मृतक से क्षमा-याचना सहित	1974
4)	बीमार न होने का दु:ख	1977
5)	तीसरे बन्दर की कथा	1977
6)	संकटलाल जिन्दाबाद	1978
7)	मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ	1978
8)	बब्बूमियाँ कब्रिस्तान में	1979
9)	किस्सा दाढ़ी का	1980
10)	जूते का दर्द	1983
11)	सोने का अण्डा	1984
12)	चोरी न होने का दु:ख	1984
13)	मुर्दा-नामा	1984

14) मेरी मौत के बाद 1984
15) बुद्धिजीवी की चप्पलें 1985
16) बधाइयों के देश में 1986
17) लोटरी का टिकट 1986
18) व्यंग्य की जुगलबन्दी (ईश्वर शर्मा के साथ) 1987
19) सड़े हुए दाँत 1987
20) क्षमा करना, हम दु:खी है 1987
21) ज्ञान की दुकान 1988
22) बुद्धिमानों से बचिए 1988
23) मेरा मुख्य अतिथि हो जाना 1989
24) ईमानदारी की गोलियाँ 1990
25) मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ 1991
26) नीर-क्षीर 1992
27) टूटी टाँग पर चिन्तन 1992
28) व्यंग्य चरितम् 1993
29) मंत्री हो जाने का सपना 1994
30) यत्र-तत्र 1995
31) लतीफ घोंघी की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कथाएँ (गुजराती में अनुदित)
32) मुर्गी चोर की कथा

उपर्युक्त रचनाओं में इनके व्यंग्य निबंधों का समावेश हुआ हैं।

लतीफ़ घोंघी के व्यंग्य निबंधों का फलक विशाल है। इसमें विषयों का वैविध्य देखा जा सकता हैं। इन्होंने धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, प्रशासनिक, साहित्यिक आदि विषयों से संबंधित विसंगतियों एवं विद्रूपताओं को व्यंग्य के माध्यम से प्रहार किया हैं।

रमेश नैयर घोंघी के व्यंग्य के संदर्भ में लिखतें हैं - "लतीफ घोंघी के व्यंग्य की सब से बड़ी विशिष्टता यही है कि यह कोड़ा भी फटकारते हैं तो शहद में भीगा हुआ। उनकी लेखनी मीठी और महीन छुरी की तरह चलती है। वार तो यह भरपूर करती है, परन्तु माधुर्य भरी झंकार के साथ। जिनको वह अपने विनोदी व्यंग्य का निशाना बनाते हैं, उन्हें चोट खाने के बाद उर्दू का यह शेर याद आता

होगा, 'कितने शीरी हैं लब तेरे करीब, गालियाँ दी पर बदमजा न हुआ।"[14]

लतीफ घोंघी ने मध्यम वर्ग के सामने आने वाली चुनौती तथा मुसीबतों का व्यंग्यात्मक रूप से चित्रण किया है। गरीबी, बेरोजगारी, महानगरों की समस्याएँ, महगाई, दहेजप्रथा, रीति-रिवाज जैसी सामाजिक विसंगतियों पर व्यंग्य किया हैं। 'टूटी टांग पर चिंतन', 'बुद्धिमानों से बचिये', 'मृतक से क्षमा याचना सहित', 'बुद्धिजीवी की चप्पले' आदि संग्रह में सामाजिक विषयों पर व्यंग्य मिलता हैं।

रिश्वत और भ्रष्टाचार के संदर्भ में 'पटवारी को मत पकड़ो' निबंध में पटवारी घूस लेता हुआ पकड़ा जाता है। उसे धिक्कारते हुए व्यंग्यकार कहता हैं - "हमारे इधर के पटवारी पाँच सौ रूपया ले लेते हैं। और पकड़ में नहीं आते। एक तुम हो कि सौ रूपट्टी में पकड़े गये। किसने बना दिया तुमको पटवारी। तुम जैसे लोग ही देश पर घूसखोरी और भ्रष्टाचार का कंकाल लगा रहे हैं। थू है तुम्हारी पटवारीगीरी पर। डूब मरो चुल्लूभर पानी में।...... अरे भैया, तुमको घूस लेना नहीं आता तो रेवेन्यू इस्पेक्टर से पूछ लेते। तहसीलदार से पूछ लेते, राजस्व विभाग मे इतने वरिष्ठ लोग हैं।"[15]

'संकटलाल जिन्दाबाद', 'मंत्री हो जाने का सपना', 'ईमानदारी की गोलियाँ', 'मेरा मुख्य अतिथि हो जाना' जैसे व्यंग्य संग्रहों में राजनीतिक व्यंग्य निबंध मिलते हैं। खुद मुस्लिम होते हुए भी मुसलमान समाज के रीति-रिवाज, रहन-सहन, धार्मिक मान्यता, मुस्लिम समाज की सांस्कृतिक विशेषता आदि पर भी करारा व्यंग्य प्रहार किया है।

लतीफ घोंघी ने आत्म-व्यंग्य भी किया है। इनकी नौं संतानें हैं। इस पर उन्होंने पत्नी के मुँह से कहलवाया हैं - "इतने बच्चें पैदा करवा दिए, तब कहाँ गई थी, तुम्हारी नाक। रोज परिवार नियोजनवाले तुम्हें तलाशते रहते थे और तुम चोरों की तरह छिपे-छिपे फिरते थे।"[16]

समाज तथा देश में घटित घटनाओं तथा विसंगतियों को वे 'नेगेटिव प्रोसेस' पर व्यंग्य लिखना पसंद करते हैं। इसीलिए इनके व्यंग्य में "नकारात्मक शैली" देखने को मिलती है।

लतीफ घोंघी के व्यंग्य निबंध शिल्प की दृष्टि से सराहनीय है। कई जगह पर इन्होंने एक ही मुहावरें का बार-बार प्रयोग करके व्यंग्यार्थ प्रस्तुत किया है। प्रतीक, उपमान, विविध भाषिक शब्द प्रयोग तथा विशिष्ट शैली प्रयोग व्यंग्य निबंधों का विशेष आकर्षण है।

लतीफ घोंघी को 'इनाडु पुरस्कार (1980), 'अहिन्दी भाषी हिन्दी लेखक सम्मान' (1981), 'जसोरिया पुरस्कार' (1984), 'सृजनश्री पुरस्कार' (1991), 'शरद जोशी सम्मान' (1994), आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया गया हैं।

इनके व्यंग्य निबंधों में विषय की व्यापकता, वर्णनात्मकता तथा शैली वैज्ञानिक दृष्टिकोण की विविधता मिलती हैं।

श्रीलाल शुक्ल (1925)

'राग दरबारी' अनुपम व्यंग्य रचना के सर्जक श्रीलाल शुक्ल हिन्दी व्यंग्य साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर है। सन् 1969 में 'राग दरबारी' को 'साहित्य अकादमी' का पुरस्कार मिला था। इस प्रकार हिन्दी व्यंग्य साहित्य को प्रथम बार सम्मानित किया गया।

सन् 1949 में उत्तर प्रदेश सिविल सर्विस में शुक्लजी प्रविष्ट हुए। बाद में आई.ए.एस. में प्रोन्नत। इन्होंने लेखन कार्य सन् 1953 से प्रारंभ किया था। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर इनकी रचनाएँ प्रकाशित होने लगी। आरंभ से ही इन्होंने हास्य-व्यंग्य लिखना शुरू किया था। उपन्यासों, कहानियाँ, व्यंग्य-निबंध संग्रह, जीवनी, आलोचनात्मक निबंध आदि का सृजन किया है।

श्रीलाल शुक्ल के व्यंग्य संग्रह :

1)	अंगद का पाँव	1958
2)	यहाँ से वहाँ	1969
3)	मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ	1978
4)	यह घर मेरा नहीं (संकलन-कहानी तथा व्यंग्य निबंध)	1979
5)	कुछ जमीन पर कुछ हवा में	1990
6)	आओं बैठ ले कुछ देर	
7)	अगली शताब्दी का शहर (संकलन)	

इसके अतिरिक्त श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास, कहानी संग्रह, जीवनी पर आधारित पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं।

बालेन्दु शेखर तिवारी ने शुक्लजी की व्यंग्य रचनाओं के संदर्भ में लिखा हैं कि - "ये रचनाएँ हमारी अपनी जिन्दगी के जीवन्त सवालों को साक्षात्कार कराती है, स्थितियों की तीखी प्रतीति के जरिए आदमी की अस्मिता को तलाशती हैं। ऊब और उदासी भरे यन्त्रगतिक जीवन को रसात्मक झटके के साथ आवृत करने में

श्रीलाल शुक्ल का व्यंग्य साहित्य सक्षम है।"[17]

श्रीलाल शुक्ल की व्यंग्य रचनाओं में सामाजिक, राजनीतिक, प्रशासनिक, शैक्षणिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में व्याप्त विसंगतियों पर व्यंग्य प्रहार मिलता है।

बेलागाडी के माध्यम से देश की प्रजातांत्रिक कार्य-प्रणाली पर इस प्रकार व्यंग्य किया है। "जैसे कालिदास को इस बैलगाड़ी से उत्कृष्ट साहित्य की प्रेरणा मिली थी, वैसे ही आजकल वह (बैलगाड़ी) प्रजातंत्र की प्रेरक शक्ति है। यै बैल कैबिनेट के समान हैं। गाड़ीवान प्रेसीडेंट का काम करता है जो बैलों को चलाता है और नहीं भी चलाता है।"[18]

छात्रों की शिक्षा के प्रति उदासिनता, आध्यापकों को शैक्षणिक कार्य के प्रति अरूचि, परीक्षा पद्वति, शिक्षण क्षेत्र में अव्यवस्था आदि विषयों पर शैक्षणिक व्यंग्य किया हैं।

साहित्य क्षेत्र में व्याप्त खोखलेपन तथा लेखकों को की कृति से पहले भूमिका लिखने की प्रणाली पर व्यंग्य करते हुए लिखा हैं कि - "भूमिका इसीलिए होती है कि पाठक समझ ले कि लेखक की एक अपनी भूमि भी है, भूमिहीन लेखकों के लिए भूमिका का इसीलिए और भी महत्त्व है।"[19]

श्रीलाल शुक्ल के व्यंग्य निबंधों में विषयगत वैविध्य मिलता है। रिश्वतखोरी, भाई-भतीजावाद इन्कमटैक्स की चोरी, बेकारी, मानवीय मनोवृत्ति आदि पर इन्होंने व्यंग्य किया है। शहर और गॉंव में व्याप्त समस्याएँ भी इनके व्यंग्य का लक्ष्य बनी हैं।

शुक्लजी ने अपने व्यंग्य निबंधों में उपमा तथा मिथक का प्रयोग करके व्यंग्य को और भी धारदार बनाया है। ये शब्दों के खिलाडी हैं। इन्होंने अपने निबंधों में सुन्दर शब्द-चयन तथा विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है। इनके व्यंग्य निबंध में कथात्मकता तथा ऑंचलिकता दृष्टिगत होती है।

'सहित्य अकादमी' पुरस्कार के अतिरिक्त इनको 'देव पुरस्कार' (1978), 'साहित्य भूषण' (1989) सम्मान, 'लोहिया सम्मान' (1994) तथा 'मैथिलीशरण पुरस्कार' (1998) आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया गया हैं।

श्रीलाल शुक्ल अपनी रचनाओं को केवल मनोरंजन का साधन न मानकर उसे उद्देश्यपूर्ण मानते हैं।

नरेन्द्र कोहली (1940)

नरेन्द्र कोहली ने सन् 1963 में एम.ए. हिन्दी में किया। तद् पश्चात सन् 1970 में पीएच. डी. की उपाधि हांसिल की। सन् 1963 में विभिन्न कोलेज में प्राध्यापक के रूप में कार्य किया। इन्होंने सन् 1957-58 में 'मैं बच्चों से धृणा करता हूँ' व्यंग्य निबंध से लेखन कार्य प्रारंभ किया। इसके पश्चात विविध पत्र-पत्रिकाओं में लिखना प्रारंभ किया। कोहली की लगभग पाँच दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। किन्तु व्यंग्यकार के रूप में इनकी निम्नांकित रचनाएँ हैं।

1)	एक और लाल तिकोन	1970
2)	जगाने का अपराध	1973
3)	मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ	1977
4)	आधुनिक लड़की की पीड़ा	1978
5)	त्रासदियाँ	1982
6)	परेशानियाँ	1986
7)	आत्मा की पवित्राता	1998
8)	समग्र व्यंग्य	1991

व्यंग्य उपन्यास

1)	पाँच एब्सर्ड उपन्यास	1972
2)	आश्रितों का विद्रोह	1973

नरेन्द्र कोहली सोदेश्य व्यंग्य लिखना पसंद करते हैं। ये विषय और शैली में विविधता लाने के लिए व्यंग्य लिखते हैं। उनके अनुसार - "(मैं) व्यंग्य तभी लिखता हूँ, जब केवल व्यंग्य लिखने के लिए मेरे पास कुछ नया हो। लिखने को नया हो तो शिल्प भी नया बन जाता है।"[20]

कोहलीजी ने अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार, पुलिस शाही, रेल्वे प्रशासन, शिक्षक, साहित्यकार, फिल्मों, अंग्रेजी शिक्षा, मनुष्य का रहन-सहन, रिश्तेदारी, नारी के जिद्दी स्वभाव, झूठ, फरेब, ढ़ोंग, मँहगाई, काला बाज़ारी, मिलावटखोरी, मानवीय मनोवृत्ति आदि को व्यंग्य का नश्तर बनाया हैं।

हमारे यहाँ के साहित्यकारों की आर्थिक तथा दयनीय परिस्थिति पर मार्मिक व्यंग्य करते हुए कोहली ने लिखा हैं - "कला का पुरस्कार ज्ञानपीठ का एक लाख रूपये का पुरस्कार नहीं है, कला का पुरस्कार तो विक्षिप्त होकर, बिना इलाज के मरना है - निराला को यही पुरस्कार मिला, प्रसादजी कुछ इन्ही परिस्थितियों में

मरे। शम्भू महाराज के चित्र रोज समाचार पत्रों में निकलते रहे वे कैंसर से पीड़ित होकर कलाकार का पुरस्कार पाते रहे और अन्त में मृत्यु का गोल्ड पाकर निगम बोध घाट जा पहुँचे।"[21]

भारत में रहने वाले लोगों के उदासीन जीवन तथा उनकी मानसिकता के संदर्भ में लिखतें हैं – "इस देश का पुरूष क्या है? कूपमंडूप! अपनी पत्नी और परिवार के हितों के खूँटे से बँधा, रहट का बैल! स्वार्थी, नीच, देश को लूटकर अपने परिवार का पेट भरने वाला। न उदार दृष्टि, न उत्मुक्त चिंतन"[22]

नरेन्द्र कोहली के व्यंग्य निबंधों में भाषा शैली का वैविध्य मिलता है। रूपकात्मक शैली, साधना शैली, फंतासी शैली, कथोपकथन शैली आदि शैलियों का प्रयोग किया हैं। साठोत्तर युग में शैली वैज्ञानिक अध्ययन दृष्टि से नरेन्द्र कोहली का व्यंग्य साहित्य अत्यधिक प्रशंसनीय है।

केशवचन्द्र वर्मा

केशवचन्द्र वर्मा हिन्दी व्यंग्य साहित्य के सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार हैं। जिन्होंने अपने व्यंग्य के माध्यम से नई तथा पुरानी संस्कृति को जोड़ने का प्रयत्न किया है। हिन्दी साहित्य में इनकी गिनती लेखक तथा आलोचक के रूपों में होती हैं।

केशवचन्द्र वर्मा का व्यंग्य साहित्य :

1)	लोमड़ी की मांस	1954
2)	प्यासा और बेपानी के लोग	1959
3)	मृग छाप हीरो (कथा संग्रह)	1959
4)	आधुनिक हास्य-व्यंग्य	1961
5)	गधे की बात (विदेशी हास्य-व्यंग्य रचनाओं का अनुवाद)	1961
6)	आफलातूनों का शहर	1974
7)	बृहन्नला का वक्तव्य	1974
8)	ज्यादातर गलत, कुछ सही भी	1975
9)	हड़ताली बाबू	1977

केशवचन्द्र वर्मा के व्यंग्य में संवेदनशीलता और वौद्धिकता का समन्वय मिलता है। इनके व्यंग्य निबंध की सब से बड़ी विशेषता यह है कि ये पैराणिक तथा सांस्कृतिक प्रसंगो एवं पात्रों को लेकर आधुनिकता पर व्यंग्य करते है।

डॉ. बापुराव देसाई ने वर्मा के व्यंग्य निबंधों के संदर्भ में लिखा है कि - "केशवचन्द्र वर्माजी के व्यंग्य निबंधों में विविधता है। साहित्यिक, राजनैतिक, प्रशासकीय, सांस्कृतिक, धार्मिक आदि सभी व्यंग्य भेदों में आपकी रचनाएँ प्राप्त हैं। निबंधों में नेता से लेकर धोबी तक व्यंग्य का निशाना बनाया है। अपने अटपटी शैली में व्यंग्य निबंधों को सृजनशील किया है।"[23]

केशवचन्द्र वर्मा ने साहित्यिक करूपताओं, सामाजिक अव्यवस्था, जूठी परंपरा, गुटबाजी, भ्रष्टाचार, घूस, अफसरशाही, बेकारी, भाई-भतिजावाद, नैतिकता, लुप्त हो रही संस्कृति, नेता, सरकारी नीति आदि विभिन्न विषयों को लेकर व्यंग्य किया है।

भारत की खोखली होती जा रही संस्कृति पर व्यंग्य प्रहार करते हुए लिखते हैं कि - "क्या कपड़े-लत्ते, क्या ड्राइंग रूम, क्या रहन-सहन, क्या कार्य-व्यापार, क्या खान-पान; क्या नाटक मनोरंजन सभी कुछ देखते-देखते एक सांस्कृतिक बाना पहनते चले गए। यहाँ तक कि अब तो बीमारियों के बारे में भी हमने 'सांस्कृतिक' और 'असांस्कृतिक' तत्त्व पहचान लिया। क्षय, कैन्सर, ब्लडप्रेशर और दिल का दौरा बीमारियों सहज ही अभिजात्य वर्ग में घुस कर बैठ गयी और शेष हैजा, प्लेग, मलेरिया, बुखार 'निम्न प्रोलेतेरियन' वर्ग में चलीं गयी।"[24]

केशवचन्द्र वर्मा के व्यंग्य निबंधों का उद्देश्य भारतीय संस्कृति के बिगड़े हुए हालत को दृष्टिगत कराके उसको पतन से रोकना है। शैली-शिल्प की दृष्टि से इनका व्यंग्य आकर्षक एवं प्रभावोत्पादक बन पाया है।

सुदर्शन मजीठिया (1931)

सुदर्शन मजीठिया भावनगर युनिवर्सिटी में हिन्दी विभाग में आचार्य एवं अध्यक्ष रह चूके थे। ये आचार्य शामलदास कालेज के कार्यकारी कुलपति भी रह चुके थे। दिसम्बर, 1946 में इनकी प्रथम कविता 'चिरंजीव सुदर्शनसिंह' के नाम से प्रकाशित हुई, तभी से उनके लेखन कार्य का दौर प्रारंभ हुआ था। व्यंग्य साहित्य के अतिरिक्त नाटक, उपन्यासों का भी सृजन किया है। ये कई पुस्तकों का संपादन करते हुए पत्रकारिता से भी जुड़े रहें। 'गुजरात दैनिक' का पाँच वर्ष तक सम्पादन किया।

सुदर्शन मजीठिया का प्रकाशित व्यंग्य साहित्य :

1) इंडिकेट बनाम सिंडीकेट 1970

2)	मुख्यमंत्री का डंडा	1974
3)	कुछ इधर की कुछ उधर की	1976
4)	कागजी सुलतान	
5)	मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ	1983
6)	डिस्को कल्चर	1985
7)	इक्किसवीं सदी	1988
8)	छीटें	1989
9)	पब्लिक सेक्टर का सांड़	1989
10)	अस्मिता का चंदन	1991
11)	फुरसतनामा	
12)	एक दांडी, दो गांधी	
13)	मि. टेन परसेंट	

'साहित्य का पेड' शिर्षक रचना में सुदर्शन मजीठिया ने व्यंग्य के संदर्भ में लिखा हैं कि - "व्यंग्य की कोई अलग डाल नहीं है। हर डाल पर व्यंग्य के पत्ते या कांटे उग जरूर जाते हैं। वैसे निबन्ध की डाल पर व्यंग्य ज्यादा फलता-फूलता है।"[25]

डॉ. मजीठिया ने सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक आदि विषयों से संबंधित व्यंग्य प्रहार किये हैं। इन्होंने आत्मस्थ एवं परस्थ दोनों तरह के व्यंग्य निबंधों का सृजन किया है।

'एकस्ट्रा कमाई' निबंध में अधिक पैसे पाने की चाह तथा रिश्वत लेने की मनोवृत्ति पर व्यंग्य करते हुए लिखा है कि - "मध्य वर्ग का प्राणी सोचता है कि एक्सट्रा कमाई हो जाए तो मैं.... . ये सब कर डॉलू। अमीर सोचता है कि एक्सट्रा कमाई हो जाए तो बीबी की अलग मोटर हो जाए या नई प्रेमिका का खर्च निकल जाए। मतलब जो जितना कमा रहा है उसे अधिक पैसे खाने की आवश्यकता है। घूस खाने वाले को लगता है कि मेरी औलाद मुझ जैसी अकलमंद नहीं है। इसलिए उसके लिए चार पैसे छोड़ जाये तो कैसा हो?"[26]

मजीठिया ने भैंस, मच्छर, गधों, मक्खी, बंदर जैसे साधारण जीव-जन्तु तथा जानवरों को माध्यम बनाकर समाज की विसंगतियों पर तीखा व्यंग्य किया है। 'डिस्को कल्चर', 'इक्कीसवी सदी', 'छीटें और अस्मिता का चन्दन' जैसे इनके

संग्रहों में सांस्कृतिक एवं राजनैतिक पतन, गरीबी, शिक्षा प्रणाली, साहित्यिक मूल्य ह्रास. धर्म और समाज के विकृत रूपों तथा नारी और युवा जगत में व्याप्त पाश्चात्य फैशन की अंधी नकल जैसे अनेक विषयों पर मजीठिया ने खुल कर व्यंग्य प्रहार किया है।

सुदर्शन मजीठिया को 'हिन्दी साहित्य शिरोमणि' (1990), 'चक्कलस पुरस्कार' (1996) जैसे पुरस्कारों के अतिरिक्त छोटे-बड़े एक दर्जन अन्य पुरस्कारों से सम्मानित किया गया हैं।

शैली वैज्ञानिक अध्ययन की दृष्टि से मजीठिया का व्यंग्य साहित्य अत्यंत उत्कृष्ट है। चयन, विचलन, समानान्तरता, अप्रस्तुत योजना, शब्दशक्ति तथा विविध शैलीय प्रयोग इनके व्यंग्य के प्रमुख आकर्षण हैं।

शंकर पुणताम्बेकर (1925)

शंकर पुणताम्बेकर ने एम. ए. (हिन्दी तथा इतिहास) तथा पी. एच. डी. (हिन्दी) करके हिन्दी अध्यापन का कार्य किया। इनकी प्रथम रचना सन् 1954 में 'तितली' एकांकी जो 'सारिका' (अगस्त-अंक) पत्रिका में छपी थी। इनकी प्रथम व्यंग्य रचना 'तमाचा' कहानी (1957) 'सारिका' पत्रिका में छपी थी। इसके पश्चात डॉ. पुणताम्बेकर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में व्यंग्य तथा व्यंग्य समिक्षाएँ निरंतर लिखते रहे हैं।

प्रकाशित व्यंग्य रचनाएँ :

1)	बदनामचा	1988
2)	पतनजली	1996
3)	शतरंज के खेलाड़ी	1997
4)	दुर्घटना से दुर्घटना तक	1997

इसके अतिरिक्त 'गुलेल' (1993-1996) नामक पांच खण्डों में संग्रह हैं, जिसमें इनकी व्यंग्य रचनाओं को संग्रहित किया है। उपर्युक्त व्यंग्य संकलनों में डॉ. पुणताम्बेकर के व्यंग्य निबंध संकलित है।

इन रचनाओं के अतिरिक्त इन्होने व्यंग्य नाटक, व्यंग्य कथा संग्रह, व्यंग्य एकांकी, व्यंग्य उपन्यास आदि कृतियों का सृजन भी किया है।

डॉ. पुणताम्बेकर ने पौराणिक पात्र, इतिहास, पाश्चात्य संस्कृति, प्रेम, परीक्षा-प्रणाली, प्रशासन, पुस्तक, विज्ञानपन, साहित्यकार से लेकर पशु-पक्षी को अपने

व्यंग्य का निशाना बनाया है। नेताओं की भाषण-शैली, उनके वोट माँग ने का तरिका, आश्वासन वचन, चुनाव में धाँधली आदि पर कसकर व्यंग्य प्रहार किये है।

'शतरंज के खिलाडी' व्यंग्य संग्रह में जीवन के विविध रंगों को प्रस्तुत किया है। 'दुर्घटना से दुर्घटना तक' व्यंग्य संग्रह में रोजमर्रा के जीवन में आनेवाली समस्याओं को व्यंग्य द्वारा चित्रित किया है। इन संग्रहों में आधुनिक युग की विसंगतियों की वैदग्ध्यपूर्ण तीखी अभिव्यक्ति मिलती हैं।

शिक्षा जगत की विसंगतियो पर प्रहार करे हुए, अनुशासन हीन छात्रों के संदर्भ में लिखते हैं - "यदि किसी के कालिज में पढ़ते हुए किसी बहाने फर्निचर नहीं तोड़ा, चालू क्लास में कुत्ते-बिल्लियों की आवाजें नहीं निकाली, कोरीडोर में प्रोफेसरों पर फब्तियाँ नहीं कसी, छात्राओं की छेडछाड नहीं की, छोटे-छोटे आदेशों का भंग नहीं किया तो बेहतर है यह कालिज में ही न पढ़े, घर बैठे बैठे ही पढ़ ले।"[27]

डॉ. पुणताम्बेकर व्यंग्य निबंधों में पैराणिक प्रसंगों में आधुनिकता लाकर व्यंग्य किया है। इनके व्यंग्य निबंधों में विषय की वैविध्यता के साथ बौद्धिक एवं परिमार्जित भाषा-शैली भी दृष्टिगत होती है। इन्होंने 'व्यंग्य अमर कोश' (1994) की रचना की है। इसमें साढ़े नौ हजार शब्दों के माध्यम से अनोखा व्यंग्य प्रयोग किया है। जैसे -

आयकर : आमदनी के अपराध का दंड।

डाक्टर : रोग निवारक जोंक।

डॉ. शंकर पुणतांबेकर को 'मुक्तिबोध पुरस्कार'(1992), 'चक्कलस पुरस्कार'(1994), 'आनन्द ऋषि साहित्य पुरस्कार'(1998), 'हिन्दी सेवी'(1992) सम्मान, 'अक्षर साहित्य'(1995) सम्मान आदि सम्मानों तथा पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

शैली वैज्ञानिक अध्ययन की दृष्टि से इनका व्यंग्य साहित्य उत्कृष्ट हैं।

बरसानेलाल चतुर्वेदी

डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी हिन्दी व्यंग्य साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर है। ये शुरूआत में ये विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में व्यंग्य लिखते थे। हास्य और व्यंग्य विषय पर डॉक्टरेट होनेवाले यह प्रथम व्यक्ति है। ये हिन्दी साहित्य के प्रथम

व्यंग्यकार है जिनको सन् 1970 में राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डॉ. चतुर्वेदी को सन् 1987 में चक्कलस पुरस्कार तथा सन् 1990 में 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया।

बरसानेलाल चतुर्वेदी का प्रकाशित व्यंग्य साहित्य :

1)	महामति चाणक्य राजदूत बने	
2)	तलाश काले धन की	1974
3)	बूरे फँसे	1975
4)	भोला पंडित की बैठक	1975
5)	मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ	1977
6)	टालू मिक्सर	1978
7)	मिस्टर चोखेलाल	1980
8)	चमचागीरी	1981
9)	मुसीबत है	1983
10)	नेताओं की नुमाइश	1983
11)	साली वी. आई. पी. की	1989
12)	तलाश कुर्सी की	1989
13)	चौबेजी की डायरी	1990
14)	'प' से पगडी	1990
15)	मुलाकात मुक्तखोरों से	1991
16)	मुँछ पुराण	
17)	'द' से दलाल	1997

डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी के व्यंग्य निबंधों में समाज, धर्म, शिक्षण, राजनीति आदि क्षेत्रों में व्याप्त विसंगतियों पर तिखा व्यंग्य प्रहार मिलता है।

आज के शिक्षण में शिक्षा के लिए डोनेशन आनिवार्य हो रहा है। इस संदर्भ में चतुर्वेदीजी लिखते हैं - "स्कूल की बिल्डिंगें बनेगी तो बोऊ हमारे माथे, पंखा चलेगें तो हमारे माथे, पुस्तकालय से किताब लिऊ तो एडवांस जमा करो और स्कूल छोडती बखत चन्दा प्राप्ति की रसिद ले जाउ।"[28]

इन्होंने मुनाफाखोरी, भ्रष्टाचार, जामाखोरी, किराये पर शोध प्रबन्ध लिखवाना, परीक्षा-भवन में चोरी करना आदि सामाजिक तथा शैक्षणिक समस्याओं पर व्यंग्य किया है।

इनके व्यंग्य निबंधों की भाषा में विविधता मिलती हैं। संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी भाषा के शब्द-प्रयोग के अतिरिक्त गाँव की बोलियों का भी प्रयोग किया हैं। मानवीयकरण, अत्यानुप्रास, उपमा,रूपक जैसे अलकारों का यथा स्थान प्रयोग किया है। मुहावरें, कहावतें तथा प्राचीन एव अर्वाचीन पदों का प्रयोग व्यंग्य निबंधों में किया है। विविध शैलीय उपकरणों के कारण इनका व्यंग्य साहित्य शैली वैज्ञानिक अध्ययन की दृष्टि से श्रेष्ठ है।

के. पी. सक्सेना (1934)

सन् 1955 से इन्होंने लेखन कार्य की शुरूआत की थी। तभी से देश की लगभग सभी हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में लिखने का सौभाग्य मिला है। आकाशवाणी तथा टी.वी. से इनके कई नाटक प्रसारित हो चुके हैं। व्यंग्य के अतिरिक्त नाटक, एकांकी, उपन्यास आदि साहित्य भी प्रकाशित हो चुका है। इनकी ढ़ेरों रचनाएँ मराठी, गुजराती, तमिल, कन्नड, बांगला और पंजाबी में अनुवादित हुई है। विदेशी पत्रिकाओं में भी के. पी. सक्सेना के कुछ लेख छपे हैं।

प्रकाशित व्यंग्य संपदा :

1)	नया गिरगिट	1975
2)	कोई पत्थर से	1978
3)	मुँछ मुँछ की बात	1980
4)	रहिमन तोर दुल्हन	1983
5)	लुटे बाजार	1983
6)	बाजूबंद खुल-खुल जाएँ	1985
7)	रहिमन की खेल यात्रा	1982
8)	तलाश कोलंबस की	1986
9)	खुदा खुद परेशान है	1987

उपर्युक्त व्यंग्य संग्रह में के. पी. सक्सेना के व्यंग्य निबंध संकलित हैं। इनके व्यंग्य निबंधों में साहित्य, शिक्षा, सिनेमा, क्रिकेट, देश-विदेश की संस्कृति, तस्करी, सरकारी अधिकारियों की कार्य-प्रणाली देश के गिरते हुए हालात, वर्तमान युग की समस्योंओं से संबंधित विसंगतियों पर व्यंग्य किया है। तो कभी चश्मा, मुँछ जैसी साधारण वस्तु पर हास्य मिश्रित व्यंग्य किया है।

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली पर व्यंग्य देखिए - "दो पतली-पतली किताबों पर

कहीं बच्चा जीनियस बनता है? राम भजिए। आज का बच्चा जीनियस है क्योंकि कमर पर पूरी नेशनल लाइब्रेरी का बौझ उठाये, सिर झुकाये, सुकरात जैसा चुपचाप स्कूल चला जा राहा है। व्यंग्यकार आगे कहता है, जितना वजनदार बस्ता उतने मजबूर कन्धे जो देश का बोझ उठाने के काम आएँगे, जो नामाकूल कंधे बचपन में बस्ते का बोझ न उठा सकेंगे वे देश का बोझ खाक उठायेंगे।"[29]

के. पी. सक्सेना के व्यंग्य निबंधों में मुहावरें तथा लोकोक्तियों का प्रचूर मात्रा में प्रयोग हुआ है। उर्दू, फारसी, अंग्रेजी, भाषा के शब्दों का प्रभुत्त्व भी देखने को मिलता है। इनके निबंधों में हास्य मिश्रित व्यंग्य अधिक मिलता है।

रोशनलाल सुरीरवाला (1931)

रोशनलाल सुरीरवाला श्री वार्ष्णेय कॉलिज में पुस्तकालयाध्यक्ष के पद पर कार्यरत रहे हैं। ये पहले कहानियाँ, उपन्यास तथा कविताएँ लिखते थे, फिर इनके व्यंग्य निबंध संग्रह, उपन्यास प्रकाशित होते गये। इन्होंने अनेक पत्र-पत्रिकाओं में व्यंग्य-लेख लिखें हैं। पहले सुरीरवाला 'बारहसैनी' में हास्य व्यंग्य लिखते थे। जनवरी 1958 में उन्होंने 'बारहसैनी' का संम्पादन संभाला।

सुरीरवाला का व्यंग्य साहित्य :

1)	लंगडी-भिन्न	1964
2)	डॉ.एम. ए. पी. एच. डी.	1967
3)	शंख और मूर्ख	1969
4)	मंच पर विक्रमादित्य	1972
5)	खाट पर हजामत	1974
6)	मूर्ख शिरोमणि	1975
7)	पत्नी शरणं गच्छामि	1976
8)	ये माँगनेवाले	
9)	भिश्ती और भस्मासुर	1982

रोशनलाल सुरीरवाला ने वैयक्तिक और निर्वैयक्तिक व्यंग्य निबंधों के अतिरिक्त कटु यर्थाथ, करूणा तथा आत्मव्यंग्य से प्रेरित व्यंग्य निबंध लिखें हैं।

'मूर्ख बनना एक कला' नामक व्यंग्य निबंध में कटु यर्थाथ की ओर इंगित किया है। "शादी से पूर्व हर लड़कीवाला लड़के और उसके बाप को मूर्ख बनाता है। विदा होने से पूर्व तक लड़की में सावित्री, सरस्वती, लक्ष्मी और अन्नपूर्णा के

सारे गुण विद्यमान रहते हैं किन्तु ससुराल पहुँचते ही दुर्गा और चण्डिका के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। इसके बदले लड़का और उसका बाप जीवन-भर लड़कीवालों को मूर्ख बनाते हैं।"[30]

सुरीरवाला के व्यंग्य निबंधों के शीर्षक लम्बे हैं। शीर्षक में भी शैली पक्ष मुखरित होता है। इनके व्यंग्य निबंध शिल्प की दृष्टि से उत्तम है। जो इनकी नीजि विशेषता है।

गोपालदास व्यास (1916)

गोपालदास व्यास हास्य के श्रेठ कवि है। फिर भी इनकी हास्य-व्यंग्य रचनाएँ उत्कृष्ट कक्षा की है।

व्यंग्य कृत्तियाँ :

1.	मैंने कहा	1951
2.	कुछ सच, कुछ झूठ	1958
3.	तो क्या होता?	1969
4.	हलो हलो	1969
5.	माफ कीजिए	1992
6.	बात बात में बात	
7.	चकाचक	
8.	यत्रम्-तत्रम् (भाग-1 और 2)	
9.	नारदजी ख़बर लाए हैं (भाग-1 और 2)	

उपर्युक्त व्यंग्य संग्रह में व्यासजी के व्यंग्य निबंध संकलित हैं। इनके निबंधों में हास्य-मिश्रित व्यंग्य मिलता है। सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षणिक तथा व्यक्तिगत जीवन से संबंधित विसंगतियों पर इन्होंने व्यंग्य प्रहार किया है।

'तो क्या हुआ?' संग्रह में देश की बढ़ती आबादी, मथुरा के पण्डों, नेता, धार्मिक आडम्बर रखनेवालों पर व्यंग्य किया है। 'अगर ताजमहल में अस्पताल बन गया तो' निबंध में व्यासजी ने तर्क शैली में देश की परिस्थिति का परिचय देते कहा है कि - "जब मन्दिरों को तोड़कर मस्जिदें बन गयी और मस्जिदों को तोड़कर मन्दिर बना दिये गये, तो आप नहीं चौंके। जब लोगों को दीवाने बताकर जेल भेजा गया और जेली बाद में मन्त्री बन गये, आप नहीं अचकचाये। जब हिन्दी राष्ट्रभाषा बनी और बनाकर मिटा दी गयी, आप को कुछ नहीं हुआ।"[31]

'मैंने कहा' संग्रह में हास्य युक्त व्यंग्य मिलता है। इसमें उन्होंने स्वयं पर भी व्यंग्य किया है। इसके अतिरिक्त इस संग्रह में कवियों, दफ्तर, हिन्दी के आलोचकों, खुशामदखोरों , पत्रकार आदि पर चुभता हुआ व्यंग्य किया है। 'कुछ सच्च, कुछ झूठ' संग्रह में सम्पादकों, बेरोजगारी, कवियों की बढ़ती संख्या, अपनी कविता दूसरों को सुनाने की वृत्तिवालें मनुष्य, अपनी प्रशंसा खुद करनेवाले लोगों पर तीव्र व्यंग्य प्रहार किया है।'हलो हलो' निबंध संग्रह में व्यंग्य से अधिक हास्य दिखाई देता है।

गोपालप्रसाद व्यास के व्यंग्य निबंध की भाषा प्रवाहपूर्ण है। स्थान-स्थान पर लोकोक्ति तथा मुँहावरें का प्रयोग किया हैं। भावात्मकता तथा वर्णनात्मकता अधिक पायी जाती है। इनके व्यंग्य निबंध हास्य युक्त है।

संसारचन्द्र

1)	सटक सीताराम	1957
2)	सोने के दाँत	1962
3)	अपनी डाली के कांटे	1968
4)	बातें ये झूठी हैं	1974
5)	गंगा जब उलटी बहैं	1981
6)	महामूर्ख मण्डल	1995
7)	तिनकों के घाट	

उपर्युक्त व्यंग्य संकलनों में संसारचन्द्र के व्यंग्य निबंध संकलित है। भारत सरकार तथा राज्य सरकार ने इनकी रचनाओं पर इनको अनेक बार पुरस्कार देकर सम्मानित किया है।

डॉ. संसारचंन्द्र के निबंधों में बनावटीपन, मिथ्याचार, दिखावेपन, फिल्म, नेता, भ्रष्टाचार, पशु-पक्षी, सब्जी, शराब जैसे साधारण एवं सामान्य विषय से लेकर देश में व्याप्त विसंगतियों पर व्यंग्य किया है।

आज चमचागिरी तथा जीहजूरी करनेवालें पर ही देश टीका हुआ है। इस संदर्भ में इन्होंने लिखा हैं कि - " आजकल चमचागिरी ही सर्वोत्तम कला है। चारों और चमचों का ही राज्य है। मुझे पाकर क्या नहीं मिलता? 'सब कुछ मिला मुझे जो तेरे नकक्षे पा मिला।"[32]

डॉ. संसारचन्द्र के व्यंग्य निबंधों की भाषा सशक्त एवं मुहावरों से युक्त है।

Smt. Hansa Mehta Library, The Maharaja Sayajirao University of Baroda

उन्होंने वचन वैदग्ध्य द्वारा व्यंग्यार्थ को प्रस्तुत किया है। इनके निबंधों में विविध शैलीय प्रयोग द्वारा आधुनिक जीवन के संघर्ष की व्यथा हास्य युक्त व्यंग्य द्वारा प्रस्तुत की गई है।

प्रेम जनमेजय (1949)

डॉ. प्रेम जनमेजय कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज, नई दिल्ली में हिन्दी विभाग में प्राध्यापक है। इसके साथ ये व्यंग्य लेखन में कार्यरत है।

प्रकाशित व्यंग्य रचनाएँ

1)	राजधानी में गंवार	1978
2)	बेशर्ममेव जयते	1982
3)	पुलिस! पुलिस!	1986
4)	मैं नहीं माखन खायो	1990
5)	आत्मा महाठगिनी	1994
6)	मेरी इक्यावन व्यंग्य रचनाएँ	
7)	शर्म मुझको मगर क्यों आती?	1998

इन्होंने व्यंग्य संग्रहों के अतिरिक्त आलोचनात्मक पुस्तकें तथा बाल साहित्य भी लिखा है। इनको 'हरिशंकर परसाई स्मृति पुरस्कार', 'प्रकाशवीर शास्त्री सम्मान', 'कलाश्री सम्मान' तथा माध्यम संस्थान द्वारा व्यंग्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए 'युवा रचनाकार सम्मान' आदि सम्मानों से सम्मानित किया गया है।

प्रेम जनमेजय के निबंधों में हमारे आस-पास के परिवेश की विसंगतियों पर व्यंग्य प्रहार मिलता है। इसके अलावा सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक क्षेत्रों में व्याप्त असंगतियों का व्यंग्यात्मक चित्रण किया है।

सरकारी दफतरों में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा रिश्वत लेने की अफसरों की वृत्ति पर व्यंग्य करते हुए लिखा हैं - "राधेलालजी ऐसे ही कलाकार हैं। वे एक सरकारी दफतर में जागते हुए भी सोते और सोते हुए भी जागते रहने की नौकरी करते हैं। कब किस फाइल पर कितना सोना है, कितने समय तक सोना है तथा लक्ष्मी के चरणों की कितनी पदचाप सुनकर जाग जाना है, इसका उन्हें पूरा ज्ञान रहता है। वो ऋण देनेवाली फाइल पर जितनी देर तक सोते हैं, उतना ही उन्हें लक्ष्मी के चरणों की पादचाप स्पष्ट सुनाई देती है।"[33]

इनके व्यंग्य निबंधों की भाषा परिमार्जित है। संस्कृत तथा अंग्रेजी भाषा के

शब्दों का यथा योग्य प्रयोग करके व्यंग्य उत्पन्न किया है। मुहावरें तथा विविध उपमा का प्रयोग मिलता है। मिथक तथा पैरोडी शैली का प्रयोग किया है। प्रेम जनमेजय के व्यंग्य निबंध में आक्रोश तथा प्रहारात्मक अभिव्यक्ति अधिक दिखाई देती है।

डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी (1948)

डॉ. बालेन्दुशेखर तिवारी हिन्दी व्यंग्य साहित्य के सुप्रसिद्ध व्यंग्यालोचक है। ये राँची विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में रीडर हैं। वे व्यंग्य-लेखन के अतिरिक्त व्यंग्य-संग्रह के संपादन का कार्य बडी निष्ठा के साथ करते है।

प्रकाशित व्यंग्य संग्रह :

1)	रिसर्च गाथा	1979
2)	बिना यात्रा की यात्रा	1985
3)	किराएदार साक्षात्कार	1985
4)	गोपनीय गृहउद्योग	1991
5)	मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ	1988

डॉ. तिवारी ने व्यंग्य के लघु स्वरूप को 'लघु व्यंग्य' कह कर, उसे विधा के रूप मे स्थापित करने का प्रथम प्रयास किया है। 'साहित्य शास्त्री', 'राष्ट्रभाषा आचार्य', 'शिवपूजन सहाय पुरस्कार', 'विद्यासागर सम्मान', 'व्यंग्याचार्य' आदि सम्मानों से इन्हें सम्मानित किया गया है।

इन्होंने सामाजिक, राजनीतक, साहित्यिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक आदि विषयों से संबंधित व्यंग्य लिखें हैं। 'गोपनीय गृह उद्योग' व्यंग्य संकलन में इन्होंने शैक्षणिक और प्रशासनिक जगत को व्यंग्य का आलम्बन बनाया है।

रिसर्च करने के लिए अयोग्य छात्रों की गाइड के पास भीड़ लगी रहती है। हिन्दी में पी. एच. डी. की उपाधि के आधोपतन पर व्यंग्य करते हुए लिखतें हैं - "हिन्दी साहित्य को विषय मानकर एम. ए. करने वाले हर प्राणी का यह परम पावन धर्म है कि एम. ए. कर लेने के बाद वह पी. एच. डी. करें। हालत यह है कि छात्रगण एम. ए. करते ही घास खोदना शुरू कर देते हैं।"[34]

डॉ. तिवारी के व्यंग्य की भाषा सहज और सरल है। इनमें अंग्रेजी शब्दों का प्रभुत्त्व देखा जा सकता है। कहीं-कहीं पर चुटकुलों, नवीन उपमानों, व्यंग्यज शब्दों तथा नवीन शैली के प्रयोग अधिकतर मिलते है। इनके अनुसार - "व्यंग्य

लेखन बनावट और दिखावट भरे परिवेश में सच को पकड़ने की जोखिम भरी कोशिश है।"[35]

श्याम सुन्दर घोष (1934)

डॉ श्याम सुन्दर घोष सन् 1957 से गोड्डा कालेज, गोड्डा में हिन्दी प्रध्यापक का कार्य कर रहे है। इन्होंने अपने साहित्यिक जिवन की शुरूआत सन् 1951 से 'मधुयामा' (गीत संग्रह) से की थी। डॉ. घोष ने कविता, कहानी, हास्य-व्यंग्य, उपन्यास, बालसाहित्य आदि साहित्यिक विधाओं में अपना योगदान दिया है। इसके अलावा आज वे आलोचनात्मक साहित्य तथा साहित्य संपादन का कार्य भी कर रहे है।

प्रकाशित व्यंग्य निबंध संग्रह :

1.	प्रेम करने की उमर	1992
2.	खिन खारा, खिन मीठा	1997

'प्रेम करने की उमर' व्यंग्य संग्रह इनका व्यंग्यात्मक ललित निबंधों का संग्रह है। इस संग्रह के निबंधों में आज के युग की घिनौनी परिस्थितियों तथा असंगत रहन-सहन पर व्यंग्य किया है। 'अखबार' निबंध में इन्होंने अखबार में दिये गये समाचारों की विश्वसनीयता तथा आधुनिक सभ्यता में इसके महत्त्व पर व्यंग्य किया है। यथा -

"अखबार में दिये गये समाचारों की विश्वसनीयता संदिग्ध किस्म की होती है। लेकिन जब आदमी उसे 'परम-सत्य' समझकर ग्रहण करने लगता है तो समझना चाहिये कि आदमी में कहीं कुछ धीरे-धीरे मर या चुक रहा है, नहीं तो वह इस 'बासी परोसी गायी थाल' से यों सन्तुष्ट न होता।[36]

डॉ श्याम सुन्दर घोष ने साधारण से साधारण वस्तु पर व्यंग्य किया है। इसके व्यंग्य निबंधों में पत्र शैली, संवाद शैली, वर्णनात्मक शैली जैसी विविध शैलीय रूप मिलते है। वे हिन्दी साहित्य में व्यंग्य-विवेचक के रूप में अधिक प्रसिद्ध है।

रामनारायण उपाध्याय

व्यंग्य कृतियाँ

1	अमीर और गरीब पुस्तकें	1958

2	धुँधले काच की दीवार	1967
3	सुख के नाम पाती	1971
4	बख्शीशनामा	1980
5.	नाक का सवाल	1983
6	जिन्हें भूल न सका	
7	जनम जनम के फेरे	
8.	मुस्कराती फाइलें	

जैसे व्यंग्य संग्रहों में रामनारायण उपाध्याय के व्यंग्य निबंध मिलते है।

'मुस्कराती फाइलें' संग्रह में राजनीति तथा प्रशासनिक व्यंग्य अधिक मिलता है। नेता लोग कुर्सी को अपनी आजीविका का साधन बना लेते है। इस पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं कि - "एक मंत्री ने सत्यता की पुष्टि हेतु कुर्सी की शपथ ली तो मंत्री की पत्नी बोली - "अरे ! जिस कुर्सी की हम रोटी खाते हैं उनकी कसम तो मत खाया करो। नहीं तो कुर्सी हमें खा जाएगी।"[37]

उपाध्यायजी के व्यंग्य निबंधों में प्रशासनिक, राजनितीक तथा सामाजिक समस्याँओं पर व्यंग्य मिलता है। इन्होंने सामाजिक विसंगतियों को व्यंग्य के द्वारा चित्रित करके समाज के बदलाव एवं सुधार लाने के उद्द्रेश्य से व्यंग्य किया है। इनकी भाषा चोटदार और हास्य मिश्रित है।

मधुसूदन पाटिल (1941)

व्यंग्य संग्रह

1.	अथव्यंग्यम्	1981
2.	हम सब एक हैं	1987
3.	शिकायत है उनसे	1990
4.	देखन में छोटे लगें	1992
5.	मामेकम् शरणम्	

उपर्युक्त व्यंग्य संग्रहों के अतिरिक्त डॉ. पाटिल ने समीक्षा के क्षेत्र में भी योगदान दिया है। अत: ये सफल व्यंग्यकार के साथ-साथ सफल आलोचक भी हैं।

डॉ. मधुसूदन पाटिल ने राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक आदि विषयों के साथ ही शिक्षा प्रणाली तथा साहित्यिक प्रवृत्तियों पर भी कस कर व्यंग्य किया है।

वर्तमान राजनीति के स्वरूप पर इस प्रकार व्यंग्य किया है। "हे देवी ! तुम्हारे एक हाथ में वोट है और एक में नोट। एक हाथ में लाठी और एक में बंदूक। वोट और नोट मेरे लिए ही हैं। लट्ठ और बंदूक दुष्ट विरोधियों के लिए हैं।"[38]

डॉ. पाटिल के व्यंग्य निबंधों में तुलनात्मक शैली का सफलता से प्रयोग हुआ है। इनके व्यंग्य निबंधों की भाषा-शैली परिमार्जित हैं, जिनमें चयन, विचलन, अलंकार, मुहावरें, प्रतीक, वक्रोक्ति आदि शैली वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग मिलता है।

सूर्यबाला (1944)

हिन्दी व्यंग्य साहित्य में नारियों का योगदान बहुत ही कम रहा है। सूर्यबाला हिन्दी व्यंग्य साहित्य में शीर्षस्थ महिला व्यंग्यकार है। इनका पहला व्यंग्य धर्मयुग पत्रिका में मार्च, 1973 में प्रकाशित हुआ। इनके व्यंग्य लेख पत्र-पत्रिकाओं में अधिक बिखरें हैं। प्रकाशित व्यंग्य संकलन ;

1) कुछ अदद जाहिलों के नाम
2) अजगर करे न चाकरी 1989

इसके अतिरिक्त डॉ. सूर्यबाला ने कथा साहित्य और उपन्यास भी लिखें हैं।

'सरे राह कुठते-कुठते' निबंध में इन्होंने प्रश्नशैली द्वारा आत्म व्यंग्य प्रस्तुत किया हैं यथा -

"अब आप से क्या छुपाना? बता ही चूकी हूँ कि यह साहित्यकार का धर्म है। स्वास्थ्य की दृष्टि से जब तक हर रोज थोड़ा-बहुत कुठ नहीं लेती, भोजन पच नहीं पाता। इसिडिटी बढ़ जाती है और बदहजमी के साथ खट्टी डकारें आनी शुरू हो जाती हैं। साहित्यकारिता का मार्ग अलग अवरूद्ध होने लगता है। सो स्वास्थ्य का ख्याल करके, समय और स्थिति के हिसाब से कामोवेश जितना हो सकता है, कुठ लेती हूँ।"[39]

सूर्यबाला के निबंधों में कला, साहित्य, संस्कृति, देश-सेवा, क्रिकेट, शिक्षा, बुद्धिजीवी, गधे, कुत्ते आदि पर व्यंग्य मिलता है। दहेज, महगाई, रिश्वतखोरी, पाखण्ड, जातिवाद जैसी सामाजिक विसगतियों पर भी व्यंग्य प्रहार किया है।

इन्होंने अंग्रेजी तथा संस्कृत के शब्दों के ताल-मेल द्वारा व्यंग्य किया है। प्रश्न शैली, संवाद शैली, तुलनात्मक शैली, विलाप शैली अदि शैलियों का प्रयोग किया है। छोटें छोटें वाक्यों के द्वारा व्यंग्य प्रहार करना इनकी विशेषता

रही है।

सूर्यबाला के व्यंग्य निबंध नवीन संदर्भों एवं नवीन भाषा शैली का प्रभावशाली स्वरूप है।

आत्मानंद मिश्र

डॉ. आत्मानंद मिश्र ने सन् 1938 से विभिन्न पत्रिकाओं में हास्य-व्यंग्यपरक रचनाएँ लिखना प्रारंभ किया था।

प्रकाशित व्यंग्य साहित्य

1)	मजे में तो हैं?	1959
2)	नमस्ते	1961
3)	जो है सो	1963
4)	बे बात की बात	1967
5)	बात का बतंगड	1970

इन व्यंग्य संग्रहों में डॉ. आत्मानंद के व्यंग्य निबंध संकलित हैं।

'नमस्ते' संग्रह में हास्य मिश्रित व्यंग्य निबंध मिलते है। 'जो है सो' संग्रह में शास्त्रीय एवं दार्शनिक विषयों पर सफता पूर्वक व्यंग्य किया गया है।

'इनिशियलस' निबंध में अपने नाम के आद्याक्षरों को अंग्रेजी ढंग से लिखने पर क्या होता है, इसका तर्क-संगत शैली में इस प्रकार व्यंग्य किया है। "हेमन्तराय अपने हस्ताक्षर हे. राम करते हैं, जिसे देखकर चित दुखि हो जाता है। बिचारा किस कठिनाई में है, किस आफत का शिकार बना है, जो इतना आर्द्रता से 'हे. राम' लिखता है। हरिगोपाल मुखर्जी के इनीशियलस में क्या छीछा लेदर हो जाती है। गजानन धामेखर बापट आदमी से गधा बन जाते हैं। सुन्दर दास अग्रवाल सुन्द राक्षक की संज्ञा पाते हैं। विश्वेश्वर प्रसाद गुप्त बनिया से विप्र बनने की चेष्टा करते दिखाई देते हैं। महेंद्रराम कष्टवार जिन्दा होते हुए भी अपने को मरा लिखते हैं। खलीकुल रहमान लोदी व्यर्थ में खर की उपाधि लिये धूमते हैं.....।"[40]

डॉ. मिश्र के व्यंग्य निबंधों में सीधी सरल हिन्दी भाषा का प्रयोग हुआ है। संस्कृत, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी, ब्रज आदि भाषाओं की काव्य-पंक्तिओं का प्रयोग किया है। व्यंग्योक्तिओं का प्रयोग किया है। व्यंग्योक्तियाँ एवं एक ही शब्द की पुनरावृत्ति द्वारा व्यंग्यार्थ प्रस्तुत किया है।

डॉ. आत्मानंद मिश्र का व्यंग्य निबंध सामाजिक "व्यवहार से उत्पन्न होने

वाली विसंगतियों की ओर संकेत कराता है। इनके व्यंग्य निबंध सहज और आत्मीय लगते हैं।

अमृतराय

अमृतराय ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से अपने साहित्यिक जीवन की शुरूआत की थी। ये प्रसिद्ध साहित्यकार प्रेमचन्द के सुपुत्र है।

1)	बतरस	1973
2)	मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनायें	1977
3)	आनंदम्	1977
4)	विजिट इन्डिया	1984
5)	बाइस्कोप	1989
6)	चतुरंग	

उपर्युक्त व्यंग्य-संकलनों में अमृतराय के व्यंग्य निबंध संकलित है। जिनमें सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, दार्शनिक आदि विषयों से संबंधित व्यंग्य मिलते है।

अमृतराय ने परिस्थितिजन्य व्यंग्य किया है। शब्द, वाक्य और कथन के द्वारा व्यंग्य प्रस्तुत करना इनकी विशेषता है। यथा -

"एक बन्दर आँख मूँदे बैठा है। एक कान बन्द किये बैठा है, एक मुँह पर हाथ रखे बैठा है। किसी की निन्दा न करो तो फिर क्या करों? पर निन्दा जैसा दूसरा रस नहीं हैं। मुँह बाँध कर रखो जब कि आसपास बड़े नेता गाँजे-चरस की स्मगलिंग कर रहा है, युनिवर्सिटी का प्रोफेसर किसी छात्रा के सहयोग से वात्स्यायन के कामसूत्र की टीका लिख रहे हैं, नगर में सिद्ध पुरूष औरतों को पुत्र-दान कर रहा है।"[41]

वचन वैदग्ध्य तथा वाक्य की आन्तरिक बुनावट में व्यंग्य उत्पन्न करना अमृतराय की विशेषता है। मुहावरें, कहावतें, प्रतीक आदि का प्रयोग इनके व्यंग्य निबंध में मिलता है। परिष्कृत भाषा-शैली के कारण इनके व्यंग्य निबंध प्रहारात्मक बन पाये है।

हिन्दी व्यंग्य साहित्य में अन्य व्यंग्यकारों का योगदान

अमरेन्द्र कुमार

अमरेन्द्र कुमार बिहार में एक काव्यान्दोलन 'प्रासिक कविता' के प्रवर्तकों में से एक प्रवर्तक हैं। ये हिन्दी दैनिक "आज" के उप-संपादक पद पर कार्यरत है।

इनकी व्यंग्य रचनाएँ हैं -

1) दूसरों के जरियें (1991)

2) जो है सो

इन्होंने "दूसरों के जरियें" व्यंग्य-संग्रह में समाज की दुर्बलताओं को प्रस्तुत करते हुए राजनीतिज्ञों के मुखौटों को उतारा है। इस संग्रह में हास्य प्रधान व्यंग्य-निबंध भी मिलते है। इन्होंने बेधक तथा मुहावरेंदार भाषा का प्रयोग किया है। इनके व्यंग्य-निबंधों को पढ़कर समाज की वास्तविक परिस्थिति का चित्रण मिलता है।

अश्विनी कुमार दुबे (1956)

अश्वीनी कुमार दुबे ने लेखन कार्य की शुरूआत सन् 1970 से की। प्रारंभ में ये कहानियाँ लिखते थे। तत्पश्चात 1982 से विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में व्यंग्य-लेखन का प्रारंभ किया।

प्रकाशित व्यंग्य रचनाएँ -

1) घूँघट के पट खोल 1991

2) युद्ध के पक्ष में

3) अटैची संस्कृति 1996

4) शहर बन्द है 1999

इन्होंने सामाजिक विसंगतियों तथा विद्रुपताओं को व्यंग्य का विषय बनाया है। अपने व्यंग्य निबंधों के माध्यम से इन्होंने यथार्थ कितना कड़वा है, यह लोगों को बताने की कोशिश की है।

अलका पाठक

अलका पाठक ने व्यंग्य के अतिरिक्त कहानी, उपन्यास, जीवनी और बाल साहित्य भी लिखा है। इनकी बाल साहित्य की लगभग सभी रचनाएँ पुरस्कृत की गई है।

प्रकाशित व्यंग्य-संग्रह :

1) किराये के लिये

2) बेअदब-बेमुलाहिज़ा

3) होना हिट लिस्ट में

4) गार्ड रक्षित दफ्तरें 1995

5) समझौतों का देश 1995

इनके 'गार्ड रक्षित दफ्तरे' संग्रह में समाज, शिक्षा, नारी, राजनेता, पुलिस, सरकारी पदाधिकारियों आदि से संबंधित व्यंग्य किया गया है। 'समझौतों के देश' संग्रह में वर्तमान जिवन की विभिन्न परिस्थितियों को रेखांकित करते हुए घर-परिवार से लेकर राष्ट्रीय-अन्तराष्ट्रीय परिदृश्य तक को व्यंग्य का विषय बनाया है। अलका पाठक ने विसंगतियों तथा विषमताओं का प्रस्तुतिकरण अत्यंत सशक्त, चुटीली तथा अर्थ-व्यंजक भाषा में किया है।

बलवीर त्यागी (1935)

बलवीर त्यागीने व्यंग्य-संग्रहों के अलावा व्यंग्य-कविता संग्रह, उपन्यास, कहानी तथा बाल-साहित्य भी लिखा है।

प्रकाशित व्यंग्य-पुस्तकें ;

1) दुखीदास

2) पैंट कंधे पर 1993

3) दुखीदास का प्रमोशन

4) श्रद्धेय होने का दुख 1990

इनके व्यंग्य-संग्रह में समाज, आर्थिक तथा राजनीतिक क्षेत्रों में व्याप्त विसंगतियों का चित्रण मिलता है। इन्होंने व्यंग्य के माध्यम से सच को यर्थाथ के धरातल पर प्रस्तुत किया है।

भरतराम भट्ट (1922)

1) अवसरवादी बनो 1995

2) तहज़ीब की शक्लें 1998

उपर्युक्त संग्रहों में इनके व्यंग्य-निबंध मिलते है। 'अवसरवादी बनो' संग्रह

में सामाजिक रूढ़ियों पर व्यंग्य बाण चलाये है। 'तहजीब की शक्लें' संग्रह में राजनीतिक तथा सामाजिक कुटेवों पर व्यंग्यात्मक प्रहार किये है। इन्होंने मिथक तथा प्रतीकों का प्रयोग करके समाज तथा विश्व में व्याप्त धिनौनी व्यवस्थाओं पर तीखा प्रहार किया है।

दामोदरदत्त दीक्षित (1949)

प्रकाशित व्यंग्य-संग्रह

1)	आत्मबोध	1984
2)	सबको धन्यवाद	1987
3)	चंद बेहूदी हरकतें	1996
4)	प्रतनिधि व्यंग्य	1998

दामोदर दत्त दीक्षित के व्यंग्य संग्रहों में भ्रष्टाचार, शोषण, अव्यवस्था, आराजकता आदि विसंगतियों से संबंधित व्यंग्य मिलता है।

गोपाल चतुर्वेदी

नई पीढ़ी में गोपाल चतुर्वेदी का नाम व्यंग्यकार के रूप में बहुत तेजी से उभरकर आया है। इन्होंने पत्र-पत्रिकाओं में कोलमों द्वारा व्यंग्य लेखन कार्य का प्रारंभ किया।

प्रस्तुत व्यंग्य संग्रह

1)	अफसर की मौत	1984
2)	दुम की वापसी	1989
3)	फाइल पढ़ि पढ़ि	1990
4)	खंभों के खेल	1992
5)	आजाद भारत के कालू	1993
6)	दाँत में फँसी कुरसी	1996
7)	गंगा से गटर तक	1997

गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य समाज के मध्यमवर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। इन्होंने राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक विसंगतियों को प्रदर्शित करने के लिए व्यंग्य को हथियार बनाया है।

हरि जोशी (1943)

अभियांत्रिकी के प्रध्यापक होकर भी हरि जोशी ने व्यंग्य-लेखन को अपनाया है। इसी कारण इनके व्यंग्य में संतुलन तथा वैज्ञानिक तटस्थता देखने को मिलती है।

प्रकाशित व्यंग्य-संग्रह

1)	अखाड़ों का देश	1980
2)	रिहर्सल जारी है	1984
3)	व्यंग्य के रंग	1993
4)	भेड़ की नियति	1994
5)	आशा हैं आनंद है	1995
6)	पैसे को कैसे लूढ़का लें	1997

हरि जोशी के व्यंग्य में आज के युग की समस्याएँ तथा मानवीय करूणा की अभिव्यक्ति मिलती है।

इन्द्रनाथ मदान (1910)

प्रकाशित व्यंग्य-संग्रह

1)	कुछ उथले कुछ गहरे	1968
2)	रानी और कानी	1974
3)	बहानेबाजी	1978
4)	भानुमती का पिटारा	1982
5)	विदा अलविदा	1982
6)	परनिंदा	

ऊपर्युक्त संकलनों में इन्द्रनाथ मदान के व्यंग्य-निबंध संकलित है। इनके निवंधों में सामाजिक जीवन में व्याप्त विसंगतियों तथा विद्रूपताओं पर गहरा व्यंग्य प्रहार मिलता है।

जगत सिंह बिष्ट (1954)

जगत सिंह बिष्ट हिन्दी तथा अंग्रेजी में स्वतंत्र लेखन कार्य कर रहे हैं। इनके व्यंग्य विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए है।

व्यंग्य-संग्रह की सूची

1) तिरछी नज़र 1992

2) हिन्दी की आखरी किताब

3) अथ दफतर कथा 1997

4) कुछ लेते क्यों नहीं

बिष्ट के व्यंग्य में उर्दु तथा अंग्रेजी भाषा के शब्दों की प्रचूरता मिलती है। इनके व्यंग्य में विभिन्न शैलियों का प्रयोग भी हुआ है।

पूरन शर्मा (1954)

ये मूलतः कवि व लेखक है। व्यंग्य संकलनों के अतिरिक्त इनकी बाल-साहित्य पर कई प्रस्तकें प्रकाशित हुई है। हिन्दी के अलावा राजस्थानी भाषा में भी साहित्य लिखते हैं।

प्रकाशित व्यंग्य कृतियाँ

1) एक थी बकरी

2) आत्महत्या से पहले 1984

3) स्वयंवर आधुनिक सीता का 1986

4) तैमूरलंग का तोहफा 1988

5) अफसर की गाय 1999

6) नये नेता का चुनाव 1999

पूरन शर्मा के संग्रह में संकलित व्यंग्य-निबंधों की भाषा और शिल्प पक्ष सरल एवं सहज है। जिसमें सामाजिक युग सन्दर्भों का यथार्थपरक चित्रण मिलता है।

श्रवणकुमार उर्मलिया (1951)

इनकी कविता, कहानी, गजल, व्यंग्य आदि रचनाएँ प्रकाशित हुई है।

1) राग बिलबिलावल 1993

2) लक्ष्मीजी मृत्युलोक में 1996

3) सौन्दर्यबोध का विटामिन

श्रवणकुमार उर्मलिया ने सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्थाओं में व्याप्त विसंगतियों को व्यंग्य के माध्यम से उजागर किया है।

अधिक विस्तार के भय से चाहते हुए भी इस शोध-प्रबंध में कतिपय

व्यंग्यकारों और उनके वैशिष्ट्य का उल्लेख नहीं कर पा रही हूँ। हिन्दी व्यंग्य साहित्य में ऐसे भी प्रतिष्ठित तथा चर्चित व्यंग्यकार है जिन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नई पीढ़ी के भी कतिपय व्यंग्यकारों का नामोल्लेख करने का लाभ विस्तार भय के कारण नहीं हो पाया है।

साठोत्तर युग में व्यंग्यकारों की समृद्धि इसका प्रमाण दे रही है की अब व्यंग्य शूद्र न रहकर, एक सशक्त विद्या के रूप में स्थापित हो चूका है। इसी युग के व्यंग्य निबंधों में इन व्यंग्यकारों ने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक आदि क्षेत्रों में व्याप्त विषमताओं तथा विसंगतियों का सफलता पूर्वक चित्रण किया है। तथा विभिन्न शैलीय उकरणों के द्वारा भाषा शैली को परिमार्जित बनाने का अथग प्रयास किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) काका हाथरसी अभिनंदन ग्रंथ, शंकर पुणताम्बेकर का कथन, पृ-177.

2) दृष्टव्य : व्यंग्य विधा और विविधा : एक समीक्षक, आलोचक रवीन्द्रनाथ त्यागी

3) डॉ. आनंद प्रकाश गौतम, हिन्दी के व्यंग्य निबंध, पृ-94.

4) सं. रमेश शर्मा - श्रीराम आयंगर, व्यंग्यम्, जनवरी - 77, पृ-9.

5) हरिशंकर परसाई, अपनी-अपनी बीमारी (1972), पृ-99.

6) हरिशंकर परसाई, बेईमानी की परत (1963), पृ-112.

7) वीणा, मासिक जन. फ. (1978), पृ-25.

8) डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी, हिन्दी व्यंग्य के प्रतिमान, पृ. 15.

9) शरद जोशी, जीप पर सवार इल्लियाँ (1971), 'चुनाव : एक मुर्माबीती', पृ-133.

10) शरद जोशी, यथासम्भव, 'महँगाई और समाजवाद' पृ-399.

11) डॉ. बापूराव देसाई, हिन्दी व्यंग्य विधा : शास्त्र और इतिहास, पृ-146.

12) डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी, हिन्दी व्यंग्य के प्रतिमान, पृ-20.

13) रवीन्द्रनाथ त्यागी, भित चित्र (1966), 'मेरा साहित्य प्रेम' पृ-39.

14) सं स्नेहलाता पाठक, व्यंग्य शिल्पी : लतीफ घोंघी, पृ-32.

15) लतीफ घोंघी, बुद्धिजीवी की चप्पलें, 'पटवारी को मत पकड़ो' पृ-87.

16) लतीफ घोंघी, बीमार न होने का दु:ख, "लड़का भागा हुआ" पृ-24.

17) डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी, हिन्दी व्यंग्य के प्रतिमान, पृ-25.
18) श्रीलाल शुक्ल, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य-रचनाएँ, पृ-61.
19) अंगद का पांव, श्रीलाल शुक्ल, पृ. 109.
20) डॉ. नरेन्द्र कोहली, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ (दृष्टव्य).
21) डॉ. नरेन्द्र कोहली, आधुनिक लड़की की पीड़ा, पृ. - 37.
22) वही, पृ-113.
23) डॉ. बापुराव देसाई, स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य-निबंध एवं निबंधकार, पृ-94.
24) केशवचन्द्र वर्मा, आफलातूनों का शहर (1974), पृ-44.
25) डॉ. सुदर्शन मजीठिया, इक्कीसवी सदी, 'साहित्य का पेड', पृ-34-35.
26) डॉ. सुदर्शन मजीठिया, मुख्यमंत्री का डण्डा (1974), 'एक्सट्रा कमाई', पृ-10.
27) डॉ. शंकर पुणताम्बेकर, कैक्टस के काँटें 'एक यात्रा नाम कमाने की', पृ-83.
28) डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी, मुँछ पूराण, 'महँगी शिक्षा की चपेट में', पृ-25.
29) धर्मयुग : 1 सितम्बर, 1985, 'पक्की और जमबूत पढ़ाई के शुभ दिन', पृ-30.
30) रोशनलाल सुरीरवाला, ये माँगनेवाले, पृ-120.
31) गोपाल प्रसाद व्यास, तो क्या होता? 'अगर ताजमहल में अस्पताल बन गया तो?', पृ-50.
32) डॉ. संसारचन्द्र, महा मूर्ख मंडल, 'बरतन सम्मेलन', पृ-26.
33) डॉ. प्रेम जनमेजय, शर्म मुझको मगर क्यों आती?, 'सो कर पाने का सुख', पृ-18.
34) डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी, मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ-38.
35) डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी, वही, (फ्लैप से)
36) डॉ. श्यामसुन्दर घोष, प्रेम करने की उमर (इलाहाबाद, 1992), 'अखबार', पृ.51.
37) रामनारायण उपाध्याय, मुस्कराती फाइलें, 'मंत्री पत्नी की माँगे', पृ-33.
38) डॉ. मधुसूदन पाटिल, हम सब एक है, पृ-21.
39) डॉ. सूर्यबाला,अजगर करे न चाकरी, 'सरे राह कुढते-कुढते', पृ-89.
40) डॉ आत्मानंद मिश्र, जो है सो, 'इनीसियल्स', पृ-37
41) अमृतराय, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, पृ-98.